

65

ASHA ARCHIVES

2639 I

आवकि सन्यसाहा ॥ कि का विस्मान ॥ उं आ १ हूं ॥ उं आ १ हूं कि स व ज्ञासन
हूं ॥ सर्वपापानयनय हूं २ म वि ध नि व कि वि म हा प नि स व न क मा हूं द ह्वा
हा ॥ मित्र विरु सन्य कि च्छ साहा ॥ उं था आ व हूं ॥ सर्व विद्यां श्रु व हूं ॥ व ऊ र
म हूं व ऊ व रु हूं स व रु २ सर्व क था ग न श्रु धि नि ह ॥ उं द नं ला म य ॥
श्रु म्ना व स हि नं ॥ सि स न्य स मा क नं ॥ कानि कू प्र ध यं यि ॥ का य न य नं ॥ वि र्ण
कि सा था य नं ॥ ध्यानं क रु धं ॥ च क वि रु व नं ॥ य ह्वा स व वा का वा ॥ च का या स

मि ना व न व रु नं ॥ क ल्वा म वि म लु सं ॥ रु व नु क न क व ल् ॥ सर्व सा का वि म कं ॥
शु व म नि जि न स्य ॥ च न्द व रु दि पि कानि ॥ धन क ॥ म म र्क ॥ जा य न वा ऊ
वं ल ॥ स ग क व न ग हं स म वं ॥ का य क मा धि क ल्वा ॥ उं आ १ हूं ॥ स व रु २ सर्व क था
ग न श्रु धि नि ह नु च्छ साहा ॥ च न्दा क वि म लु य कि च्छ साहा ॥ ध्यान ॥ उं म ना
धि हि न रु मि म ल् ॥ यं का ला दि व रु वि रु सं ज्ञा नं ॥ म हा रु नं वा य श्रु मि ॥ ऊ
ला य नि म लु ला प वि ॥ सं का ला न क म य म ल् ॥ व ल सि हा स न हं ॥ य व न्द न्दी

चिह्नं निममन्यामि यिदमर्घ्यं सखा ॥ ॐ स्वाहा ॥ लिख्यं वनवाधिव्यावृत्तानां
वृद्धारुवयं जगन्नादिनायः दक्षना सर्वपापानां पुन्यानां चावृत्तानां कुल
पवा संकटविघ्नाभि ॥ आर्यं शुभार्गं मागमः ॥ ॐ स्वाहा ॥ गमय भव
कुट्टिययुसाहिकं सफत्रसमाकर्तुं नदनूकदायुषी ॥ गुर्व्यावृद्धधर्म
स्य संघस्य संघे वयः निर्यान्त्यामिहा वनः सपुर्णत्रयमलुनं ॥ ० ॥
अनादिमिह संसात्रः ॥ ॐ नमो नित्यं पूज्यं नः ॥ ॐ नमो नित्यं पूज्यं नः ॥ ॐ नमो नित्यं पूज्यं नः ॥

ॐ स्वाहा ॥ चिह्नं किञ्चिदः ॥ अममया नायः भादक नद स्यामि ॥ एकान्ता यन नापि
कुर्वन्तु न मायका वाजाः ॥ मा नापि कुसा रामया ॥ वनपु अय सखाः ॥ कपवा काय
वा वृद्धविषयं अन्नकर ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥
नमो वन्द स्याम्यहं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
स्वाहा नमि महायकलीः ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥
लादि ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

अग्रस्वाहा ॥ नमस्वाहा ॥ वायवस्वाहा ॥ ॐ शानाविषकं स्नानमस्वाहा ॥ ए
 स्थापदानपूजासुक्ति ॥ ० ॥ नमस्तुकाराजानां सर्वत्र निवायनं
 सावविजयादिनां सर्वकारं नमस्तु ॥ ० ॥ यनवि सजनयाय ॥ ॐ क
 स्ववसर्वस्वानां सिद्धिदस्वायथानगा गच्छुर्ध्ववृद्धविषय ॥ पुनरावर्तुगम
 नायव ॥ ॐ श्री ४ हूं ॥ हूं श्री ॐ गच्छु २ वरुमस्तु संविमूर्जन ॥ ॥ यन श्री
 सिवादतय ॥ ॐ वृद्धसिंहासनसंस्तुवनदिनकसे ॥ सर्वसाकेकमेवन्धु ॥ रा

ब्राह्मवचकसावे ॥ इति कसमयतुं दवदवां किदवपायावावर्तुधनुयत्रमः
 वत्रगुवृथीवृद्धज्ञानं इति नार्थ ॥ ॥ यनसिधुवपूजा ॥ ऊऊमानः मलुसयित्र
 कं स्नानवायक ॥ लहस्यकाय ॥ ॥ यनदगुविशय ॥ ० ॥ ॐ नमः
 श्रीवचकसम्बन्धाय ॥ ॥ समन्वाहवन्तुमां वृद्धाः अस्मिन्निदुसस्तिना ॥ ॥ आगा
 मृगकससपानि विगुद्धचिह्नं पिथादिदसगमननः किगुद्धददं धीयी ०
 मक्षवसमलुसचकनाथा वन्दसदागुवृव्रासिवासाननः अथय्यादिम

सायावः यस्यानक्त सनापयिकं ॥ वन्दनां वरुणावाही । वक्रसम्बन्धनायका ।
 द्विद्यालिरुषिगदहन्नायः । विदसदावाजिनसर्वगाम । वक्रनार्थसहजा
 मन्त्रायः वन्दसदावाजिनसम्बन्धकागसावा । न कालाकनसात्रसूकानिवयं । प
 यमस्यगदयत्रः । तस्मिन्वन्दनसूक्तुधवत्रः । मयमस्यैत्मकं । सर्वज्ञसुविम
 द्धनिवयं । दिव्यावयं । सन्दनं वन्दहसहजा मसावसुत्रमि । श्रीसहजादयनाय
 क ॥ १ ॥ मेति कनूत्तामदिताउपका । ॐ स्वरावसुद्धासर्वधर्मास्वरा

४॥ न x

वसुद्धाहं । शुन्यगान्नानवजस्वरावामकाहं । शुन्यविरावा ॥ पथमकत्रसमन्वा
 नः । पर्वगादाऊउच्चिस्थान । सवपाविरमककसि । दक्षिणादिमन्वाजागी । यका
 मरुवर्कि । कामन्वापयिकः । श्रीद्वककिरुवयकुरकनः । महामन्वनः । श्रीकाः
 समद्वयज्ञानहन्कि १ शुन्यव्यब्कि । अपगनकहं । कन्किनकचसिहन् ।
 शुन्यविरावा ॥ २ ॥ ननयकस्का । चहन्कात्रः । मन्वादयन् । व्यस्का । चव
 यावन ॥ वदनास्का । चवकस्य ॥ संज्ञानस्का । चयमनिग्यध्वन ॥ सस्कावस्का । च

वक्रवाङ् ॥ विज्ञानकाश्च भवजसत्त्व ॥ सर्वकथागमत्त्वः श्रीहृदयकावङ् ॥
वक्रवाङ्मादवङ् ॥ २॥ कथाद्वयवङ् ॥ दानयोमीकावङ् ॥ वक्रवाङ्गवङ् ॥
सयस्यमांसयवङ् ॥ सर्वयत्नवङ् ॥ शिथिलीधनुषाकनिःश्रुपः
धनुमात्रली ॥ न जाधुवाकत्तली ॥ वायुधनुषमनुष्यधनुःश्रुकाशधनु
यमकालिनी ॥ नववङ्कत्तली ॥ यमनपुद्गुवाविशुद्धिः ॥ ॥ हृदिहि
कपकात्रनविश्वदत्तयमः ॥ यमकर्तृकायत्रिचन्द्रसूर्यमण्डलं ॥ रुद्रयः

७३ न।
त्रिहंकासूक्तयत्रिनामनद्विकृजसम्भवकावयवङ् ॥ एगवक्तं कृष्णवर्णम
कमखा ॥ त्रिनकाश्रीधामनसहितं ॥ महाकृतवकासिनागाकान्तमानं ॥
वक्रवाङ्कासिर्गनं ॥ रुद्रद्वयनवङ्कवङ्कयत्तप्रभं ॥ ऊयमकूटमालिनं
४ कपासमासातकनं ॥ शिवसंभूतवन्दुधालिर्ष ॥ विश्ववङ्काकान्तमासिनं ॥ विक
माननदुष्टकटकिषर्ष ॥ शुर्गावादिप्रसाभिर्ष ॥ व्याघ्रवर्मातिवसनं ॥ सङ्घ
नप्रतिनामात्राशमाङ्गधालिर्ष ॥ षट्सङ्गापन ॥ कलिवाङ्कवङ्ककुलसमवसा

सिद्धामलिहृषर्षः यद्वायविनरुणागिपटमद्रायकिर्किना ४ षट्पात्रमिनावि
श्रद्धि ॥ २०३० ॥ षडे मद्राकि ४ मदिनं ॥ कल्यायनारुगवनीयकवर्षाचकः
मद्रादिहृजागिननामकुटकज्ञानग्राह्यलुमादिनमखसा ॥ वामरुजागिर्गि
नाकयात्रसुश्रुदयमायायासिनधया ॥ दक्षिणरुजयंकीदिसप्तर्षीदयर्ष
नी ॥ वज्रिकाकल्यागिन् ॥ महाकजाधवयनि ॥ वृषिप्रमुखीर्ज्यादयन ॥ समा
रुका नायकं महासखकेवृणात्मिका ॥ ॐ श्रीहनुकाहं ३ शुकाव

नचन्द्रमलुसं ॥ आकावचसूर्यमलुसं ॥ ॐ वज्रयमद्रुसं ॥ ॐ हनमहिखाः
हा ॥ हंवाषट्हं ॥ हं हं हं हं हं ॥ दक्षिणहस्त ॥ ॐ वं दं यं कीं मां हं कीं हं
ट् ॥ वामहस्तं न्यास ॥ ॐ हं हं हं हं हं ॥ नमदिसप्तर्षीहं ॥ हं गिन्नी ॥
षट्हं संधय ॥ हं हं हं हं हं ॥ हं हं हं हं हं ॥ ॐ वनास
॥ हं हं हं हं हं ॥ कीं मां क ॥ हं हं हं हं हं ॥ हं हं हं हं हं ॥ हं हं हं हं हं ॥
हं ॥ अग्न्यास ॥ ॐ श्रीहं वज्रहं हं हं हं ॥ किनीजावसम्बं हं हं ॥

हा

अथाधिष्ठान ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ या नमः ॥ पूजाधिष्ठान ॥ ॐ निश्चयस्तु ॥
वसि ॥ ॐ वरुणस्तु ॥ या नमः ॥ ॐ आरुह्यस्तु ॥ मन्त्रकलाटकधुनां विराज्य ॥ आकाश
लकपासः साकाशस्तथावती ॥ अथ दक्षिणामकमखात्रकवर्णं किञ्चिज्ज
खर्गवानाकैः ॥ सर्वकथात्रकालिष्वरुह्यगदगथाघृणाः नमस्तुत
यदा ॥ इह काष्ठनृपाश्चैवः खद्वर्गस्तु कत्रमलुस्तुः शूरमर्गित्रीनायवः गनयनी
यारुत्रकत्रः नमस्तथावर्षसावन्वाः सत्त्वास्तु सत्त्वरीः इहार्द्रकावहका

वहवर्गवर्षः इहकावगन्धनासनंः कींकाववीर्याहनाच ॥ अमृताकावकुलाः
वयम् ॥ ॐ आरुह्यस्तु ॥ इहार्द्रकावगन्धनासनंः कींकाववीर्याहनाच ॥ अमृताकावकुलाः
गमस्तुत ॥ ॐ नमो देवीवावर्ष ॥ अमृताकावकुलाः ॥ सर्वसत्त्ववसंकत्रिः
अमृताकावकुलाः ॥ ३ ॥ पश्चात्पहात्रयुजास्तु ॥ नीलनीलाजनीला
रामकावसर्गसर्गिणीः रुक्माहंस्वामहंवावमकया रुक्मामकी ॥ ॐ ॥
मस्तुमस्तुनगिरसिस्तान ॥ दिगवन्ध ॥ ॐ मस्तुमस्तुमस्तु ॥ ॐ गुरु ॥ ॐ ॥

ॐ गृह्णापय २ हं हट् ॥ ॐ आनयदा रुगवन विद्या ब्राह्मय हं हट् ॥ यथादि । कृष्ण
स्यामत्र क पीरु ॥ काकास्याः उरकास्याः स्नानास्याः सुकमास्याः ॥ यमयादि ॥
यमेशकिः यमदसलीः यममथनी ॥ ॐ भदेनीवजी कवकजवन्ध हं ॥ ॐ वज्र
पाकात्र हं वं हं ॥ ॐ वज्रपाकात्र हं वं हं ॥ ॐ वज्रपंकजस हं पं हं ॥ ॐ वज्रवि
मान हं वं हं ॥ ॐ वज्रस्रजानना सं वं हं ॥ ॐ वज्रज्ञानसा र्क हं हट् ॥ ॐ य
घद्याटय २ सर्वदृष्टान हं हट् ॥ ॐ कीलय २ सर्वपापान हं हट् ॥ ॐ हं ३ वज्रकी

लयजवधना आह्लापय कि सर्वविद्यान् कायवाक्चिह्न कीलय २ हं हट् ॥ ॐ व
ॐ वज्रमङ्गलवज्रकीलयमाका कय २ हं हट् ॥ महासीनचिह्नय ॥ क का का सा
वसावसी । वजावसी । पद्मावसी ॥ यनसूक्तनिष्ठादि ॥ दिगवन्ध ॥ ॐ ॥
ॐ पुं ऊं औं शुं गं नोदं मों कों डों त्रिकां कं कादि यं गं शां गं नों सिं मं कं पी ॥ ॐ य
पी ॥ ॐ कृष्णाय नमः । रुद्राय नमः । मत्स्याय नमः । भगवते नमः ॥ मध्वा
॥ ॐ आ १ हं ॥ धर्मो ह्ययमध्वा । हं कात्र ॥ नदन् ॥ हृदि हं कात्र सुमि मदा मदा

सहाय्यकानि नरुवनादिनाः अनादि संसिद्धि श्रीमन् श्री श्री चक्र सम्बन्ध समा
 लुप्तयश्चकस्य यम् ॥ ३ ॥ जयवसुक्तावायः १ श्रीचक्र सम्बन्ध रुद्रावयः ४ याया
 वमनार्थयमिन्नुखाहा ॥ ॐ ऊँ हँ वँ हाँ ॐ आ १ हँ ॥ ॐ श्रीचक्र रुद्रवृक्कादि ४ ॐ
 ऊँ हँ हँ हँ हँ ॥ ॐ सर्ववृद्धाकिनीयगादि ४ ॥ मध्य ॥ ॐ अकिनीय हँ हँ हँ ॥ ॐ
 साम हँ हँ हँ ॥ ॐ खलु सा हँ हँ हँ ॥ ॐ त्रिपिनीय हँ हँ हँ ॥ दिगमावकृशम् ॥ ७ ॥
 ॐ कज्जवाटक हँ हँ हँ हँ ॥ ॐ समयकवाटक हँ हँ हँ ॥ ॐ विसमयकवाटकः

किनी २

स्वाहा
 हँ हँ हँ ॥ ॐ समयविसमयकवाटक हँ हँ हँ स्वाहा ॥ ॐ दिगमावकृशम् ७ ॥
 ॐ कज्ज १ यचलुय हँ हँ हँ स्वाहा ॥ ॐ कज्ज २ यचलुय हँ हँ हँ स्वाहा ॥ ॐ
 यचलुय कमीय हँ हँ हँ स्वाहा ॥ ॐ नागय २ महानाय हँ हँ हँ स्वाहा ॥ ॐ कारुय
 २ विममनिय हँ हँ हँ स्वाहा ॥ ॐ ऊँ चवनीय हँ हँ हँ स्वाहा ॥ ॐ हन २ संकषणीय
 हँ हँ हँ स्वाहा ॥ ॐ हँ २ हँ मध्यय हँ हँ हँ ॥ ॐ हँ २ जलावनीय हँ हँ हँ स्वाहा ॥
 ॐ हँ २ महारुद्रय हँ हँ हँ स्वाहा ॥ ॐ पव २ वायवगाय हँ हँ हँ ॥ ॐ रुद्र २ व

समस्त विमान सावयवित्थं हंरुट् स्वाहा ॥ उं गृह २ सफपां कालरुडं गासफः
वाक ऊय २ ध्यामादवीय हंरुट् स्वाहा ॥ उं आकट मरुडाय हंरुट् स्वाहा ॥ उं
ऊं २ दयक ऊय हंरुट् स्वाहा ॥ उं ऊं २ खभा ननाय हंरुट् स्वाहा ॥ उं ऊं २
वकवगाय हंरुट् स्वाहा ॥ उं हा २ हा २ खलुबा हाय हंरुट् स्वाहा ॥ उं हा २ हा
लीलीय हंरुट् स्वाहा ॥ उं ऊं २ वकवमनीय हंरुट् स्वाहा ॥ उं किसि २ सूवी
वीय हंरुट् ॥ उं सिसि २ महावसाय हंरुट् ॥ उं हिसि २ वकवमनीय हंरुट् ॥

उं धिवि २ महावीय हंरुट् ॥ का कासाङ्गुणादि x ॥  ॥ उं सर्वगथा
गकसुत्रलिक विसासमिन ४ धीचकसम्बरुदावकायं ऊं हं वं हा ४ युकिः
ऊकसमांजलिनाथाहा ४ ग्यजलि ॥ यच्छा यहाव पूजासुनि ॥ ० ॥
षाउलवासा ॥ उं वरुसुखसंगानं ॥ उं वरुवत्तमनरुत्रः ॥ उं वरुधर्मग्रावनः
उं वरुकर्मकनाहुवं ॥ उं वरुवत्थं हं ॥ उं वरुवत्थं ॥ उं वरुमृदणीऊं ॥
उं वरुमृजुजु ॥ उं वरुहास्य हं ॥ उं वरुमासा नां ॥ उं वरुमीनकी ॥ उं वरु

[illegible][illegible]

नि २

शास्त्रं ननु यन्मम उ० कथितं पातनयः यत्प्रक्रियुक्तं १२ गादमानमवसा
मदासिनः ध्यायिनं भोजनं धीधनपाठशास्त्राधवकुं चित्तं यः यद्विर्मनून १३ न १
कुम्भः ध्यात्रसंसारकाकात्रसुनात्रिनं भाविदायनं वरुसत्वं न मे ॥ ० ॥
१२ मज्जनयन ॥ हस्तपूजा ॥ मन्त्रमन्त्रादियुष्मन्त्या ॥ उं ३ सर्ववद्व्यादि ॥
म ॥ उं वं वरुवावाहियव्यादि ॥ उं हनमहिनि ॥ पूजा ॥ कथन ॥ उं वृषा
॥ उं वृषादि ॥ उं संख्यासिक्त्रवर्क खत्रकत्रनिकवापागसर्वककाकिः

न

२

कर्किसर्वाकिहन्ती हन्ती हन्ती मृकघनातिरुनी सवादाया विराना वामदाया
कत्रसमनिसिक्त्रनं वरुपुर्कः ध्यायाः कात्यादम्हासिकात्यापत्रिमिनि।
पि सागकमद्धासुहृताः मल्लुतिमलिनागीमखगत्रदसुजंः स्वादगुमक
न ॥ सवादादकियासावत्रधुरुगमनाकाधमनाननाकाः सानदासानः
वागाविविधनसयूनामर्द्धपर्यकनृणा १२ मदासत्तदिनांगीः वापनकवसना
पाठसान्दावनांगी। सिन्धुनात्रुवर्दे १२ सहयसा ॥ वरुवीविनीनायिका

यास्यानमस्तु जाना विधात्रास्तु नाः श्रीसम्भाषि विधानत्रयस्य नामादिकावली
ली। सर्वसिद्धियदायिका ॥ रुगत्रकीदवीनमस्तु सर्वसिद्धिदायिनी ॥ अथ नामादली
॥ १ ॥ विधी सर्वसक्तुसलीः कथास्वविमलायागी ॥ २ ॥ विधाः नखात्रा
॥ ३ ॥ नाननद्युता। नीतनीकणा विद्यामाः प्रमप्रसक्तुः ॥ ४ ॥ पदाकाद्युव
॥ ५ ॥ गताकनूतात्मानः कृष्णकस्यरावकः कृत्तिककणा ॥ ६ ॥ अथ नामादलीः
॥ ७ ॥ यागिनीगला ॥ ८ ॥ कृष्णकात्रिकप्रसक्तुमादिकः मयमयिने

निहितनिवित्रदायानांः आद्यकयनिदश्यामिपुत्रकठयूनकत्रलंः सप्तन
॥ १ ॥ अथ आद्यकः कृष्णजिनार्कमः किनगुलसूगकसंरुतानि। कृष्णाना ॥ २ ॥ अथ
॥ ३ ॥ आलोसमाकपनिनामयानि ॥ ४ ॥ अथ किनत्रलाद्विदिकयः सप्तनः
॥ ५ ॥ सर्वरावनः वाधियदध्यापनरुत्रमार्गशयासुव ॥ ६ ॥ देवता ॥ सप्तनयसु
॥ ७ ॥ लहानसलहानसलमकलासीरावयिकय ॥ ८ ॥ अथ किनत्रलाद्विदिकयः सप्तनः
॥ ९ ॥ गमस्तु ॥ १० ॥ अथ किनत्रलाद्विदिकयः सप्तनः ॥ ११ ॥ देवता ॥ सप्तनयसु ॥ १२ ॥

[illegible][illegible]

॥ गंगाज्योतिर्मा ॥ गंगा

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हि न वद्वि मखदयान् ॥ खखमनुषाग्निश्रवमनंयनीच्छुखाहा ॥ ॐ शुभ्रयखाहा ३

दृक् दृक् पत्रि कडर्या ॥ ग्राहमी पत्रि पत्रि कडर्या ॥ ग्रीष्म पत्रि पत्रि कडर्या ॥ उं अकार

स्वाहा॥ अर्कस्य॥ ॐ वज्रसामायस्वाहा॥ पद्मास्य॥ ॐ वज्रगोत्रायस्वाहा॥ खदिन

॥ॐ वक्राय स्वाहा ॥ अणामा गाय ॥ॐ वक्र कुवमाय स्वाहा ॥ उदम्बराय ॥ॐ वक्र यहाय स्वा
हा ॥ इन्दीवराय ॥ॐ वक्र सनिधमाय स्वाहा ॥ अनिकलु ॥ॐ वाधिवृकाय स्वाहा ॥ अश्व
लाय ॥ॐ वक्र सनाय स्वाहा ॥ पित्राकाय ॥ॐ वक्र वीजाय स्वाहा ॥ अक्रकसनस्य ॥ॐ म
धूनस्य स्वाहा ॥ मधूनस्य ॥ॐ अश्वकाय स्वाहा ॥ असाकस्य ॥ॐ सर्वपापय समनाय स्वाहा
॥ वक्रकस्य ॥ॐ सर्वकृपाय समनाय स्वाहा ॥ कदम्बस्य ॥ॐ सर्वकारुडाय स्वाहा ॥ रुनाः
कस्य ॥ॐ रिन्नाटकाय स्वाहा ॥ रिन्नाटकस्य ॥ॐ सकृवाय स्वाहा ॥ सकृवस्य ॥ॐ व

क्रमरुकाय स्वाहा ॥ आसस्य ॥ॐ अयमिह न वजाय स्वाहा ॥ कृषानां ॥ॐ वक्राय स्वा
हा ॥ इन्दीवराय ॥ॐ सर्वपाप दहन वजाय सर्वपाप दह २ स्वाहा ॥ रिन्नानां ॥ॐ व
क्राय स्वाहा ॥ अक्रक ॥ॐ वक्र वमाय स्वाहा ॥ कच्छा ॥ॐ वक्र यस्मन् स्वाहा ॥ ३॥
ॐ वक्र वीजाय स्वाहा ॥ स्वांवा ॥ॐ वक्र वीजा रुवाय स्वाहा ॥ पूवा ॥ॐ वक्र मदावता
य स्वाहा ॥ मास ॥ॐ वक्र मदाका लाय स्वाहा ॥ म्बान ॥ॐ वक्र कासनमाय स्वाहा ॥ कास
क ॥ॐ वक्र कलावाय स्वाहा ॥ कयगुत् ॥ॐ वक्र मर्जवीजाय स्वाहा ॥ मर्ज ॥ॐ सर्वः

पञ्चविंशत्यस्त्राहा ॥ न कायका ॥ ॐ सर्वसंपदस्त्राहा ॥ दक्षिणुजन्त ॥ ॐ वज्रवाजायस्त्रा
हा ॥ माय ॥ ॐ वज्रदण्डनरनायस्त्राहा ॥ धृक्कायस्त्राहा ॥ ॐ वज्रपिशाकमायस्त्राहा ॥ पि
यंगु ॥ अनघांशिकत्वनहागव्या ॥ पक्ष्मपदायकमुनि ॥ ॥ नमो भूषिण्यथ
माहमि ॥ गीर्वाणिनित्रायन ॥ स्वस्तिवाक्मादि x ॥ दानपत्रं वज्रमानस्य ॥ जानि स्वस्ति
कामार्थ ॥ यथमाहमि गृहं २ ॥ ॐ वज्रस्त्राहा ॥ पक्ष्मपदायकमुनि ॥ वज्रसंजीवनि
जामं ॥ विश्ववर्ष ॥ महाकासं ॥ वेदाननामहं वन्द सर्वसंपदायकं ॥ ० ॥ नमो सा

कारुवद्भानाग्निविहाय ॥ कासाकावर्षादिकमवन्दासनायनिमलुसाधिय
मिबीऊनिष्ठानविद्रवीऊयवितामयामलुसाधियमिसमाहृतयंविहाय ॥
हानसत्त्वस्यकीवनीतमिवसमवसत्वनसहकीकृत्यजावमनादिकंकृत्यामस्तमनु
दायसांन्यास ॥ पक्ष्मपदायकमुनि ॥ वज्रसमिन्नादि x ॥ ॥ नमो इति जिः
कायाः नमः सर्ववादिकंकृत्यामस्तमनुत्तरुह्यान् ॥ ॥ यनसिदकद्वय ॥ नमो
हानाहमि ॥ यनकासायापूजा ॥ ॥ यनसिदशपूजासुनि ॥ दत्तमाहमि ॥ ॥

ददामहः सर्वदत्तनागयः कृगन्धर्वसूत्रागवृत्तिकिन्नवमहावगादयायथस्वरूप्यमाद
यत्किञ्चयमममन सिद्धिययत्तलं ॐ आ ४ रुं ऊं हूं स्वाहा ॥ ॐ गिक्वृक्वसावसि ॥ य
नमहावसिर्येवि ॥ स्वाहा ॥ गाथाययनं धूनदात्र ॥ यनयक्कागिनिसाधन ॥ जायधूप
यक्कगहविय ॥ धंस्वसंस्वहाय ॥ ॐ स्वहृत्ताह रुंदटु ॥ सिन्धुमाहनिआगमकसंः कथंथाः
सकत्रं गिय ॥ एकमूखः ऊऊमः वागाः कर्षयगाकः थूकिनयधूनकात्रः यक्कधनास
वहायः नासाहायः गवासुद्धियाकूटवाडय १०४ ॥ गीतकातरि ॥ थूकिधूनः नृग

वाः सदाः शुवापाकसकयावः साहकिविय ॥ थधूनः आकू समयादिं विन्दुविय ॥ पक्का
कृत्रहाय ॥ गीतऊयंऊयं ॥ थसिधूनः आकू सदस्यदागांनसंः वीत्रमकयादः आः
हकिविय ॥ वियधूनकात्रं थवमसुः वंकात्रवायावेकोनायाय ॥ यननिष्ठायमिष्ठाआ
हकिविय ॥ गुत्रमधुनदनक ॥ सरं वूय ॥ वऊवका ॥ यहासंय ॥ यथाविधिथं हूत्रा ॥
थनयूक्कययकं सिनकाकन ॥ ॐ ॥ ॐ गगल २ गगलविल्वकिनकआत्रा
जायः ऊऊमानस्यगाकिपूषिंक्वृस्वसिस्वाहा ॥ वात्रनसिक्कास ॥ ॐ समाधीदसख

दा ॥ ३ मणि ॥ ॐ वरुवा सखादा ॥ ऊ ऊ मका ॥ ॐ सयषा सकु स क सनी ययुषि कु नू रू
रू रू खादा ॥ ३ दा स य म खा न ॥ ॐ वरु यषा खादा ॥ दा दा सखा ॥ ॐ ध म २ ध म बा ऊ दः
रू २ सर्व विप्रिय शानि कु नू रू रू रू खादा ॥ रू रू गु सि ॥ ॐ वरु ध य ना खादा ॥ ध य ॥ ॐ व
जा सा क की खादा ॥ दी य ॥ ॐ वरु स्क भ म सा य खादा ॥ रु स कि ० स्कं ध ॥ ॐ वरु नाम्
सा य खादा ॥ मय म्मा न ॥ ॐ वरु सयी स का य खादा ॥ य च य क वा न ॥ ॐ वरु म व संध
क सा य खादा ॥ कु स म ॥ ॐ सर्व वला क सा य खादा ॥ सा न ॥ प सा क ॥ ॐ वरु वी जा य खा

दा ॥ स म क ॥ ॐ सर्व कर्म कनी य खादा ॥ नू य क ध ॥ ॐ वरु म द खादा ॥ य म क ध ॥ ॐ रू न २
रू रू रू खादा ॥ स ध बा ऊ ॥ ॐ कु नू २ सर्व कार्या वा य य खादा ॥ कुं कु म ॥ ॐ म द २ सर्व द
वा न य खादा ॥ क य व ॥ ॐ व नी रु वा य रू रू रू खादा ॥ न क च गु न ॥ ॐ ऊ य २ रू रू रू खा
दा ॥ श्री म्बु ॥ ॐ हि व न्ध य द खादा ॥ दा म्बु रू क ॥ ॐ सर्व वला य द खादा ॥ न सा च कं ॥
ॐ स म य सर्व आ य य २ रू रू रू खादा ॥ अ गु नि सि ॥ ॐ सर्व या म सा ध य रू रू य रू रू रू
नू रू रू रू खादा ॥ रु गु नि ॥ ॐ वि क रू ॥ न म व पि य वि धु ठि ॥ वि र सा य खादा ॥ रू नः

ॐ अमन् वदन् ॥ ॐ कनिधनि सर्वसिद्धिं कुरु कीं स्वाहा ॥ आहूताम् ॥ ॐ मुनसां
सर्वभाग्यमनाय स्वाहा ॥ ऊहावधि ॥ • ॥ यनचक्रुर्महाबाजायान् आहूति
विय ॥  ॥ ॐ श्रीमन् श्री श्री धनत्रासु विवृट् कवित्राण क कृवसादिं चक्रुदि
गावस्मिन् यत्रिदमाहूति गृह्ण २ हूं हूं स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ श्रीमन् श्री श्री जम्बूदी
यनपात्रमस्तु श्री स्वयं कुरु यन्महान् श्री सती नय कुरु नादो यो वरुनानां स मे
नितसात्राहू वस्मिन्नां ॥ २ ॥ सून ॥ यवद्वमस्तु तस्मिन्नाः सूर्यमस्तु तन

थाः सत्राय यमस्तु सूर्यवः कासाश्च वदन्मस्तुः आकासमस्तु सूर्यः न स ऊरु न स म
स्तु स वसन्ति सर्वदवानां न कुरु कामार्थदिना स्वस्ति कस्तुः दीद्या मर्गस्यार्थसाध
कं ॐ दं यनिकवत्रसंघनत्तं एनन सत्वन ह्मास्तु स्वस्ति स्वाहा ॥ ३ ॥
वद्वधर्मसंघयात ॥ श्रीमन् श्री श्री वद्वधर्मसंघादिं रगवन् ४ साय सतिः वज्राय वाधि
सत्वादि । कामना सर्वमधिनाः श्री स्वयं कुरु यन्महान् कुरु मिहार्थसिद्धायादश
द्वात्रयशस्मिन्नाः दवाजिनागनाः न सर्वदवताकायः सूरिकुरु त कामार्थस्वस्ति

स्वाहा ॥ ४ ॥ वाजाय नमः ॥ सर्वपादवमानां हिः रुमानाश्च हि न विष्णुः ॥ इ
ननाथार्कमनायः नथाधर्मकयापितः ॥ जगन्नामीकयः ॥ सर्वसम्पत्स्वावाहूमस्तु
वशविशक्तिं कायस्य रुद्राविशक्त्यावित्तलीकनाः ॥ जगन्विशक्तिनासया ॥ सर्वस्व
स्तिकविशक्तिः ॥ श्रीसलीमायुविमनावमः ॥ मानिगवापनावमः ॥ महानगवाविशक्तिः
श्रीश्रीवीरववनवहाइवप्ररुथाकृत्रस्यः ॥ अखलुखमसिद्धियकायकल्यानकामार्थस्व
स्तिस्वाहा ॥ ५ ॥ वाहाय नमः ॥ ॐ श्रीमन् श्रीश्रीकृष्णाय नमः ॥ वाहाय नमः ॥

सद्यस्तद्विगस्तवानांः सूर्यकुरुमौकोथस्तिस्वाहा ॥ ६ ॥ धनसिद्धिमाहूति ॥
ॐ श्रीवक्रार्थमहापाहूः ॥ अमकनामवक्तिनाः ॥ अरुंरुवक्तुकल्यानः ॥ सिद्धिस्तु
नायुधः ॥ पायवक्तिमहापाहूः ॥ सिद्धिसिद्धिवकामनार्थस्तिस्वाहा ॥ ७ ॥
दानयामिनाय ॥ दानयनऊजमानस्यः ॥ अमकनामरुद्रकस्यः ॥ सयविवावानांः मनावां
स्तुसंयाफकामार्थः ॥ जयासाहाकरुतकासंयाफकामार्थः ॥ सूर्यवृद्धिः ॥ आवागद
सिद्धिस्तु ॥ शनः ॥ पायवक्तिमहीसंपूर्णः ॥ जयत्वंकरुवयदं ॥ न सर्वपनिवायस्यः नि

दासदीर्घायुः श्रीमन् श्रीश्रीभूमकदत्तगुरुदात्रकस्य ॐ दमाहमि गृह्ण २ हं हं हं हं
 हा ॥ ६ ॥ यनूयुक् ॥ समय। अद्वानया १ कस्यः युक्ताय ॥ सतिवाक ॥
 ॐ अग्न्यादिपदियाविषमहावीर्यः दवाकवावाहनाय ॥ दानपकऊऊमानस्य
 णादि x। पुनय २ युक्ताहमि गृह्ण २ सतिस्वाहा ॥ ॐ ॥ पुनूयुक्ताय ॥ युजा
 कुकि ॥ ॥ अग्नकंचरुं वाहाकपुय ॥ यनदगुसिवासिय ॥ महावासिवा
 य ॥ यनधुवाहनाथापय ॥ ॐ नमः श्रीवक्रु सखाय ॥ दवाहनासर्वरुं गसि

द्वाः नाकासपुनूयुक्ताय नवः गन्धर्वककागुहजागपवः यकविनेकुमानिवस
 निकुनाः नृयंकजानपिथिविकवहंः कनांऊसिविहूयियामिनासः संपुनदा
 वासहनुकसंधः सुखांदायानु यनगहास्काः ऊमयुयिसुनिवसंनिकुनाः
 यनलुनयवः सत्राययषु । ऊवादयासुविमलुलषु । नगत्रयसर्वेषुसत्रव
 सक्तिः सत्रिनसुसर्वसुसंगमषुः वत्तात्रयात्रापिकनाधिवसिः वापिदैकदा
 लषुवपनाऊषुः नगत्रयसर्वेषुनिदमषु । ऊषामथाषुः सत्रकात्रनषुः सुन्या

अथ दत्तगृहपूयः विद्वत्तत्वेनावस्थापयत् ॥ मर्यादासाधनसर्वकृतानां तु
काययन्त्रिगृहावसन्ति यथासुखवर्तिषुतः पञ्चवयः ऊवकवृक्षः महापथः
षु महासमखानेषु महावनेषु सिंहरुत्रकाः धृषिनास ऊष ॥ वसन्ति धारा मः
हानविषुः कृषुदियषुकुमात्रायः मन्त्रसमखानेषु निवासयन्ति ॥ दृष्टा
युनासकगन्धमात्रा ॥ धृयंवसिदियं विधिवरुक्काः गृह्णन्तु रुजन्तु यिवन्तु दं
॥ वक मसदसंशुगन्तु ॥ ॐ दानुवकि सहदवसंघः ॐ दं वसिं गृह्णं वसिं वि

सिद्धिः अग्नियमानमन्त्ररूपमिच्छा आययनिवायुधनाधियमिध्वः ॐ ज्ञानरुकाधि
पमिचदवाः सरद्धवन्दाकपिना महावः दवा समस्त रुमि विजयनागाः धन
गुक्कगनसमगाः युकि २ गवनिवदयमिः साकसाकाणापूदिसास रुकाः गृ
ह्णन्तु रुयासह दामसन्ताः संपुनरुसजनसमगाः धृयंवसिदियं विधिवरुक्काः
गृह्णन्तु रुजन्तु यिवन्तु दं ॐ दन्तु क मसदसंशुगन्तु ॥ वकवृक्ष समखानवः
यवककं लुगृहः गामयास्वपथरुक्कसन्तागात्रविमसकः कानसहवगकः

म्माः सागंगारुविष्णुपन। कषुत्रुदमहात्रुददवदकसमासिकं। कषुत्रुकात्राविरु
सिः नन्दारिकविनायकः चामलिधायिविरुसिः उमादवीरुसंरुवाः जयाच
विरुयात्थेः अजिनाअयनाजिनाः रुडकात्रिमहाकासिः सुतकासिकिआयिः इदि
चलिधायिः किमकिदसखरीः कम्भाजिदिनिवृत्तिन्याः गामावसिगजागिणीः
धासत्रुणमहात्रुणदसत्रुणकयात्रिनिः कयात्रमात्रमात्रिनाः खडांगायमदडि
काः खर्भेदकायत्रसुहसाः वरुहसाधनूकथाः पंचजकिनिमहाकलः सर्वकर्म

नूसाधकः जागमलुसंमहात्रागीवृजध्वरीप्रुरुकथाः कथागरुमहाकायः निमं
ऊनंजायहौधृषिकाः इंदवऊध्वरीआह्लाः आवाहनसर्वसंविधि ॥ उं कककद
नः वववंदनः खखखान्दनः हनश्चघघाठयश्च। दानयकऊऊमानसः वत्सावन
पूजासानिपुस्तिंकुत्रुस्वस्तिरुंरुंरुट्स्वाहा ॥ पूजास्तुति ॥ ॥ यनऊऊमानः
गुत्रुमलुसदनक ॥ स्नानकिरुन ॥ यनगुत्रुपूजाकायः दकना ॥ दगुसिसम
य ॥ रुमायन ॥ अरुषिक ॥ आसिवाद ॥ मृगान। समय ॥ ॥ यनकृष्ण

उथायं संकयात्रः लिखा इति ॥ विद्य ॥ पुनश्च विदवन्मासावय ॥ ॐ ॥ ४ ॥ हृदय
रुक् हृदयपत्नी सिमानं रुक् २ हं स्वाहा ॥ ॐ ॥ आ हृदय रुक् दानयन रुक् ५ ॥
रिति लिखितं पुस्तक २ पुस्तक लिखा इति ॥ ॐ ॥ पुनश्च मुनिना वादिः कानवद्विषः
दास्य ॥ सासनादि जिन्म रुक् कानु कानु वाजि वनास्य निः ॥ ॐ ॥ एक मरुत्त सं ॥ वि
ष्वायु मरुत्त वराः कामदवद्विर्वेवः चन्द्रसूर्ययि निगदा ॥ यथिविषाधुध
वाश्चैवः कृतसंकृत्य लिखा ॥ धर्मनाकाधनागाधः गन्धर्वसूत्रा केन वाः ॥ य

यकि साहि मादवाः शुक्रनिहानिवा सिनीः महा नाकाहि मादवाः यकि निहान
ववददाया फास ह्वा वास्य गावैवः मासि चित्ता कथा रुः महा धनु निवा सिनी च
रुक् मिथि मासत्वाः सिनायन सिनायि पुः रुक् नं सर्व सा कानांः समागुत्तयि
मादय ॥ मदि ना रु मिथ्या फाः विमनाया कन सखाः अत्रु मि निवा सानं ॥ वा
वनायां कन यरा धर्ममद्यान लाश्चैवः इरुयायां कन यरा इतंगमा रुया फाः
पुसा कार्या दिवा सिनी ॥ दधरुमी चना लाथोः आर्य अष्टा गयंगवाः संवत् ॥

वकावः त्वमेविधानप्रपिनीः प्रननवकमिथ्येव । दद्यात्तमनूकं यमिमाहा
मविधानन ॥ ॐ नमो गवमसुहा । स्वस्ति जानिहेरुनाति ॥ १५ ॥ पुनय २ पूर्व
स्यवाहकिगृह २ स्वस्ति स्वाहा ॥ पूजासुमि ॥ ॥ धनमसावसिद्धाय ॥ वि
सर्जन ॥ ऊजमानकुवः मसुतयागासवहाय ॥ ॐ मित्र ॥ चनमांसाहकिर
हविधिसमाह ॥ ॐ ॥ ॥ यथाश्मुसमन २ १२ हाह ॥ १३ ॥ ॥ दसि
सामवायः थकुरुवायसिधयकाहना ॥ ऊसाधनमहाविहायवावकावाय

श्रीगुरुदेवसिंहहस्त वासं वियाह्व ॥ ॐ ॥ ॥ सिधिनं चववाहाय
वकावाय ॥ हाह ॥ सिंह सिखायिना ॥ ॐ ॥ ॥ शुद्धवा ॥ शुद्धवा ॥ ऊथा
हस्तः नथाअपिनममदायनासि ॥ ॐ ॥ ॥ शुद्धमगुतवकुसुदा ॥ शुद्ध ॥